eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

दलित एवं ग्रामीण जीवन का दस्तावेजः मुर्दहिया

[1]डॉ. अरुण कुमार
[2]आकाश
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0)
[2]विद्यार्थीएम0ए0 हिन्दी, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0)

Received: 31 August 2023 Accepted and Reviewed: 02 September 2023, Published : 10 September 2023

Abstract

आत्मकथा गद्य लेखन की वह विधा है, जिसमें लेखक अपने जीवन की घटनाओं का निरपेक्ष रूप से चित्रण करता है। इसमें लेखक का वास्तविक जीवन–चरित्र समाहित होता है। आत्मकथाकार अपने आंतरिक जीवन–चरित्र से बाहरी दुनिया को परिचित कराता है। मुर्दहिया (2010) और मणिकर्णिका (2014) डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा है, जो हिन्दी साहित्य में मूलतः 'दलित आत्मकथा' के रूप में प्रसिद्ध है। इसमें आजमगढ़ के धरमपुर गाँव के मुर्दहिया स्थान का जीवंत चित्रण है। लेखक ने भुतही पारिवारिक पृष्ठभूमि, स्कूली जीवन की संघर्षपूर्ण शिक्षा, अंधविश्वास, गिद्ध तथा लोकजीवन, भुतनिया नागिन, भगवान बुद्ध तथा डॉ. अंबेडकर के प्रगतिवादी विचारों, गरीब और दलित परिवार में फाकाकशी उपशीर्षक द्वारा मुर्दहिया के ग्रामीण और दलित जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, स्पृश्यता और लोक–संस्कृति का यथार्थ वर्णन किया है। इस आत्मकथा में धीरजा, जूठन, मुसड़िया, मुन्नेसर काका, नग्गर काका, मुंशी रामसूरत, परशुराम सिंह, संकठा सिंह, रामधन, किसुनी भौजी ,सुग्रीव सिंह, देवराज सिंह, आदि ऐसे पात्र है जो उस गाँव के तत्कालीन अंधविश्वास, अपशकुन, कामचोरी, रहन–सहन, खान–पान, छुआछूत, भूकमरी, महामारी, शिक्षा व्यवस्था, कृषक जीवन, एवं दलितों के शोषण का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देते हैं। अपमान, अनादर, उपेक्षा, बाल मनोदशा, जीवंत–लोकसंस्कृति, संयुक्त परिवार की समरसता का जितना सजीव चित्रण 'मुर्दहिया आत्मकथा' में हुआ है, वह अन्यथा दुर्लभ है। वास्तव में यह आत्मकथा दलित एवं ग्रामीण जीवन का दस्तावेज है।

मुख्य शब्द– दलित, आत्मकथा, स्पृश्यता, मुर्दहिया, लोकजीवन, अंधविश्वास, जियो–पॉलिटिक्स, भू–राजनीति, परवाना, अपशकुन, हिंगुहारा, विद्रूपता।

Research Paper

आत्मकथा एक ऐसी लेखन की विधा है, जिसमें लेखक अपने जीवन में घटित घटनाओं, रहन–सहन के परिवेशों एवं जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों का यथार्थ चित्रण करता। लेखक मैं, शैली में आप बीती बातों को इस प्रकार से अभिव्यक्त करता है कि पाठक पूरी तरह से उसके जीवन के साथ एकाकार हो जाता है। यह लेखन की ऐसी विधा है जिसमें आत्मकथाकार अपनी आंतरिक दुनिया को बाहरी दुनिया से परिचित करवाता है। यह एक जीवनीपरक और सूचनापरक विधा है जिसमें लेखक अपने जीवन में घटित घटनाओं का यथार्थ चित्रण करता है। 'आत्मकथा' के लिये अंग्रेजी में और 'ऑटोबायोग्राफी' शब्द का प्रयोग किया जाता है। हिंदी साहित्य में आत्मकथा के लिये विभिन्न पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे–'आत्मचरित्र',

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

'आत्मचरित','आत्मकहानी','आत्मजीवनी','आत्मवृत्त','आत्मविश्लेषण', 'आत्मगाथा' आदि। आत्मकथा मूलतः दो शब्दों के मेल से बना है। 'आत्म' और 'कथा' जहाँ 'आत्म' का संबंध लेखक स्वयं से रखता है। तो 'कथा' का संबंध उसकी बाहरी दुनिया अर्थात् उसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं शैक्षिक परिवेश से होता है। तुलसीराम ने क्रमशः दो आत्मकथाओं– मुर्दहिया और मणिकर्णिका का लेखन किया है। मुर्दहिया में तुलसीराम ने अपने जीवन के आरंभिक सोहल,सत्रह वर्षों का लेखा–जोखा यथार्थ स्वरूप में चित्रित किया है। इस आत्मकथा का केंद्र आजमगढ़ के धर्मपुर गाँव का मुर्दहिया स्थान है। मुर्दहिया का परिचय देते हुए लेखक कहता है। "मुर्दहिया हमारे गाँव धर्मपुर (आजमगढ़) की बहुद्देशीय कर्मस्थली थी। चरवाही से लेकर हरवाही तक के सारे रास्ते वहीं से होकर गुजरते थे। इतना ही नहीं, स्कूल हो या दुकान, बाजार हो या मंदिर, यहाँ तक कि मजदूरी के लिए कलकत्ता वाली रेलगाड़ी पकड़ना हो, तो भी मुर्दहिया से होकर ही गुजरना पड़ता था। हमारे गाँव की 'जियो–पॉलिटिक्स' यानी 'भू–राजनीति' में दलितों के लिए मुर्दहिया सामरिक केंद्र जैसी थी। जीवन से लेकर मरन तक की सारी गतिविधियाँ मुर्दहिया समेट लेती थी।"1

दलित एवं ग्रामीण जीवन का दस्तावेज : मुर्दहिया आत्मकथा– मुर्दहिया आत्मकथा दलित एवं ग्रामीण जीवन की महागाथा है। इसमें लेखक कि बाल्यावस्था से महाविद्यालय जीवन तक के संघर्षों का यथार्थ चित्रण है। लेखक के जीवन की एक–एक घटनाओं से तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर अनेक–अनेक सवाल खड़े हो जाते हैं। लेखक का गरीब होना, दलित होना, गाँव की दलित बस्ती में पैदा होना, जन्म के बाद चेचक की मार से काना बनना और आरंभिक शैक्षिक जीवन में उपेक्षा का शिकार होना। अनेक ऐसे मानव जनित अभिशाप है, जो लेखक को जीवन पर्यंत प्रभावित करते हैं। इस आत्मकथा के माध्यम से समग्र ग्रामीण संस्कृति, उसके परिवेश और दलित जीवन के अभिशप्त जीवन के संघर्षों का पता चलता है। इस आत्मकथा में वेदना,संघर्ष, प्रतिरोध, घात–प्रतिघात, विद्रोह एवं जीवन को जीने की उत्कट इच्छा से अभिप्रेरित होकर लेखक अपने जीवन को सफल बनाने में समर्थ हो पाता है। लेखक ने इस आत्मकथा को सात उपशीर्षकों में विभाजित किया है। जिसमें अपने जीवन से जुड़े सभी पहलुओं का वर्णन किया है। प्रथम उपशीर्षक में 'भूतही पारिवारिक पृष्ठभूमि' का चित्रण है। गाँव व घर के सदस्य का अनपढ़ होने के कारण अंधविश्वास इतना अधिक था कि लेखक के दादा को खेत में किसी व्यक्ति द्वारा मार दिया गया था, किंतु लेखक के परिवार व गाँव के सभी लोग समझते हैं कि उनको भूत ने मार डाला। तीन वर्ष की अवस्था में लेखक पर चेचक का प्रकोप इतना गहरा हुआ की उसकी दाईं आँख की रौशनी हमेशा के लिए विलुप्त हो गई और लेखक सभी के लिए 'अपशकुन' बन गया। लेखक अकेले 'अपशकुन' का शिकार नहीं था। जंगू पांडे को भी 'अपशकुन' का रूप माना जाता था लोग मानते थे कि जंगू पांडे की नजर बहुओं अनिष्ट कर देती है। इस प्रकार लेखक का दोहरा शोषण हुआ करता था। उन्हें घर वाले व गाँव वाले 'कनवा' कहकर पुकारने लगे। दादी लेखक से अगाध प्रेम करती थी। दादी द्वारा सुनाए जाने वाली कहानी बहुत ही स्पष्ट रूप से चित्रित की गई है। डांगर खाने की घटना व डांगर खाने पर रोक लगाए जाने के अभियान को दलितों द्वारा पूर्ण समर्थन का विस्तार से वर्णन किया गया है। ढांगर खाने व अवैध सम्बन्ध से मिलने वाले दंड का लेखक ने स्पष्ट वर्णन किया है। यदि कोई डांगर खाता या अवैध यौन सम्बन्ध बनाता, तो उसे कुजाति घोषित कर दिया जाता था। अर्थात् बारहगाँव

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

से हुक्का पानी बंद कर दिया जाता था, दंड स्वरूप सम्पूर्ण गाँव सूअर–भात खिलाने के बाद बिरादरी में वापस लिया जाता था। मृतक को कब्रिस्तान ले जाते समय पर 'परवाना गीत' गाया जाता था, लेखक की शिक्षा की शुरुआत केवल इसलिए हुई थी कि वे चिट्ठी पढ़ सकें। लेखक ने अपने घर को अजायबघर की संज्ञा देते हुए कहा है की "इस तरह हमारा परिवार संयुक्त रूप से वृहद् होने के साथ–साथ वास्तव में एक अजायबघर ही था, जिसमें भूत–प्रेत, देवी–देवता, सम्पन्नता–विपन्नता, शकुन–अपशकुन, मान–अपमान, न्याय–अन्याय, सत्य–असत्य, ईर्ष्या–द्वेष, सुख–दुःख आदि–आदि सब कुछ था,किंतु शिक्षा कभी नहीं थी।"2 मुर्दहिया आत्मकथा के उपशीर्षक 'मुर्दहिया तथा स्कूली जीवन' में लेखक ने स्कूल जीवन की चर्चा की है। लेखक के पिता तेरसी ने अंधविश्वासी होने के कारण 'अंबिका पांडेय' से स्कूल जाने का शुभ दिन पूछकर उसका स्कूल में दाखिला कराया था। लेखक गाँव से डेढ़ किलोमीटर दूर पैदल स्कूल जाता था। स्कूल में भी उसे अपमानित होना पड़ता था। उसे बच्चे 'चमरकिट' कहकर पुकारते थे। उसकी लिखने में मदद 'संकठा सिंह' नामक क्षत्रिय बालक ने की। शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टता का स्वरूप देखने को मिलता है। लेखक के स्कूल में बालकों से दो रुपये पास करायी यानी पास करने की घूस ली जाती थी, लेकिन लेखक रुपये देने में असमर्थ था, इस कारण उसे फेल कर दिया गया। लेखक को अपनी दादी के प्रति असीम प्रेम था। दादी उसे राजा–रानी, कौआ–गोरिया की कहानी सुनाती, उसकी दादी द्वारा वर्षा ऋतु में दलितों की पीड़ा का वर्णन का उल्लेख उचित ढंग से किया गया है। जब दलितों को भोजन नहीं मिलता तब वह चूहा मार–मार कर खाने को विवश होते थे, यह उनकी घोर पीड़ा को दर्शाता है।

उसके गाँव में कुछ एक पात्र अंधविश्वास से ग्रसित नहीं थे, जिस कारण उसकी दादी की जान बच गई। लेखक के गाँव प्रतिवर्ष हिंगुहारा आता और अपनी हींग के पैसे माँगता था। उसका पैसा माँगने का कुछ विशेष ढंग था। जैसे उसे जंगलू के घर से पैसे लेने हो तब वह कहता "हे जगलू क माई, काम धाम बंद करा हींग क पइसा खर्र करा"3 जब लेखक के घर पैसे माँगने आया, दादी को मरणासन्न अवस्था देखकर उसने बरहलगंज बाजार के पास अस्पताल में ले जाने की सलाह दी। घरवालों ने अंधविश्वास से ऊपर उठकर उसकी सलाह मानी और दादी को अस्पताल ले जाया गया, जिसके कारण उनकी जान बच गई और वह ठीक हो गई। लेखक ने अपना गाँव के 'रामजीत' जोगी बाबा कि एक बड़ी भारी विशेषता बतायी वह किसी के मुँह से पहला जो शब्द निकलता उसकी तुरंत कविता बना देते जैसे किसी ने कहा आँधी तो तुरंत गाने लगते–

"जइसन कहत बाड़ा आंधी, वइसन मारल गइलै गाँधी,
बड़ा सा ससतिया सहबा राम, बड़ा सा ससतिया सहबा राम।"4

लेखक अपनी बस्ती के बच्चों के साथ बकरी चराने का कार्य करता था। एक बार वह खेल रहा था और बकरी को सियार द्वारा मार दिया गया। तब उसकी घर वालों ने उसकी खूब पिटाई की। अंधविश्वास के चलते छौना (सूअर का बच्चा) की बलि दी गई। इन घटनाओं के कारण लेखक अंधविश्वास हो गया था। इसके चलते छोटी सी घटना के लिए भी चमरिया माई की प्रार्थना करने लगता था। लेखक ने दलित समाज में प्रचलित, रीति–रिवाज और मान्यताओं का सम्बंध सीधे बौद्ध धर्म से जोड़ा है। आत्मकथा का तृतीय उपशीर्षक "अकाल में अंधविश्वास है" लेखक की कक्षा स्कूल

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

में कमरे ना होने के कारण पेड़ के नीचे लगा करती थी जिससे वह दुखी होता था,किंतु वह बड़ा हुआ तो उसे बहुत संतोष हुआ। "वर्षों बाद यह समझकर बड़ी संतुष्टि की अनुभूति हुई कि पूरा का पूरा भारतीय दर्शन ही पेड़ों के नीचे सोचा गया था, जिनमें सर्वोपरि थे गौतम बुद्ध जिन्होंने 'निर्वाण' यानी हमेशा के लिए दुखों से छुटकारा की विधि एक पेड़ के नीचे ढूँढ निकाला था।"5 लेखक पानी पीने की समस्या का वर्णन स्पष्ट रूप से करता है, दलित बालकों को स्कूल में पानी पीने के लिय बहुत अधिक प्रताड़ित होना पड़ता था। मुंशी जी दलित बच्चों को कुआं को हाथ नहीं लगाने देते थे। 'मिसिर बाबा' को यह काम दिया जाता, वह पानी कम पिलाते तथा भिगाते अधिक थे। जिस कारण मुंशी जी बच्चों की बुरी तरह गाली देते थे।

आत्मकथा में लेखक ने अध्यापक के कर्तव्य का भी वर्णन किया है। एक बार मिशिर बावा ने उत्तेजित होकर हनौता गाँव की 'सतिया नोनियाइन' को अपना अंग विशेष दिखा दिया। जिस कारण नोनियाइन की शिकायत पर मुंशी जी ने मिशिर को खूब पीटा। लेखक ने ब्राह्मणों द्वारा तोल में किए जाने वाले भ्रष्टाचार का भी वर्णन किया है। बीज देते समय कम तोला जाता था तथा वापस लेते समय एक का डेढ़ गुना चुकाना पड़ता व तोल में भी घोटाला किया जाता था। इसी तरह दलितों का दोहरा शोषण किया जाता था मुर्दहिया आत्मकथा की भारी विशेषता यह है कि लेखक ने इसमें अवैध स्त्री–पुरुष संबंधों का चित्रण काफी तटस्थ रूप में किया है। "सोफी की बहू तथा दोनों बेटियां सौंदर्य के मामले में अपरम्पार सम्पन्न थी, किंतु भूख उन्हें भी लगती थी, पर उसे मिटाने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं होता था। धीरे– धीरे मजबूरी में उनका सौंदर्य काम आने लगा। गाँव के कुछ अभद्र ब्राह्मण युवक संध्या के समय मुर्दहिया के उस मुहाने पर लगता था कि स्वयं भूतों की चौकीदार करने लगे। उन नटनियों का सौन्दर्य मुर्दहिया की उन्हीं कंटीली झाड़ियों के पीछे प्रायः गुम होता रहा।"6 लेखक ने दलित समाज में व्याप्त अंधविश्वासों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। लेखक के गाँव में धार्मिक भावना का स्पष्ट रूप देखने को मिलता है। जब वह मुनेस्सर चाचा द्वारा लाई गई रामचरितमानस का पाठ करता तब गाँव के लोग आते और रामचरितमानस सुनने में मग्न हो जाते। 'मुर्दहिया के गिद्ध तथा लोक जीवन' इस आत्मकथा का चौथा उपशीर्षक है। लेखक सात मील दूर 'बवुरा धनहुवां' नामक गाँव में पाँचवीं के पेपर के लिए पैदल जाता था। अकाल के कारण उसे कम भोजन में संतोष करना पड़ता था। लेखक को अपना पढ़ाई बंद होने की आशंका हमेशा सताती व डर रहता है कि कहीं उसे उसके पिता के स्थान पर 'सुदेस्सर पांडें' की हरवाही करनी न पड़े। जिससे लेखक का दिल दहल जाता था। लेखक को अंग्रेजी पढ़ने का अत्यंत उत्साह था, क्योंकि अंग्रेजी की शिक्षा कक्षा छः से पढ़ाई जाती थी। किंतु डर अपनी चरम सीमा पर था। लेखक ने दलितों का शोषण दलितों के माध्यम से किये जाने की घटना का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है। 'रमौती' नामक महिला को मुर्दहिया से डांगर ले जाते बालकों ने देख लिया, यह घटना लेखक के चाचा को पता चल गई। जिस कारण इसे कुजाति घोषित कर दिया गया और सुअर–भात की संपूर्ण गाँव को दावत खिलाने के बाद उसका कुजातिपन समाप्त हुआ, जिसमें वह भारी कर्ज में डूब गयी। लेखक ने अपने ननिहाल में रहने का वर्णन बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। लेखक ने मुर्दहिया के लोकजीवन के विभिन्न पहलुओं को उठाया है। लेखक ने एक बार पढ़ाई छोड़ने के डर से घर से भागने का प्रयास किया, किंतु उसका यह प्रयास असफल रहा। परंतु उद्देश्य की पूर्ति हो

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

गई, उसकी पढ़ाई जारी रही। लेखक ने सोफी के परिवार को धर्म निरपेक्षता की एक ज्वालंत मिशाल बताया। वह सोफी की बड़ी बेटी 'ललती' (नटिनिया) को अंग्रेजी सिखाने जाता था। इस कारण उसके परिवार वाले उसे आवारा समझने लगे। लेखक ने मुर्दहिया के जंगल में नटिनिया को बचाने के लिए साँप मार दिया। गाँव वालों ने उस साँप को मुर्दहिया का पुराना भूत बताया, जिसका बदला भूतनी नागिन बनकर लेखक से लेगी। इसलिए लेखक को भैंस के कमरे में सोना पड़ता था। लेखक नागिन से बचने के लिए जप–तप का सहारा लेने लगा। उसके चाचा चौधरी सोम्मर बुरी तरह से बीमार हो गए। अंधविश्वास के कारण बहुत बड़ा अनुष्ठान किया गया। किन्तु सोम्मर चाचा नहीं बचे, वह मर गए। अपने पिता द्वारा माता पर हुई हिंसा के कारण लेखक के मन में घृणा का भाव इतना बढ़ गया कि एक बार उसने अपने पिता के जोरदार चांटा मार दिया। पिता ने भी लेखक के जोरदार चांटा मारा। इस घटना के बाद उसके पिता ने उसकी माँ को पीटना बंद कर दिया।

होली के अवसर पर दलितों मे व्याप्त अंधविश्वास के प्रति सजगता दिखाई देती है। होली के अवसर पर परंपरागत रूप से दलितों द्वारा ब्राह्मणों के घर बचा खुचा खाना न माँगना दलित अस्मिता को दर्शाता है। लेकिन द्वारा सवर्ण छात्र की साइकिल के हैंडल को छूने पर अपमानित होना पड़ता है, जिसके कारण उसके दिल में ठेस पहुंचती है। लेखक प्रस्तुत शीर्षक में भारत चीन के युद्ध का वर्णन किया। 'चले बुद्ध की राह' प्रस्तुति आत्मकथा का छटा उपशीर्षक है इस उपशीर्षक में वीर रस के कवि 'श्याम नारायण पांडेय' तथा 'सखी संप्रदाय' का संक्षेप में वर्णन किया गया है। लेकर राहुल सांकृत्यायन व गौतम बुद्ध के जीवन से बहुत अधिक प्रभावित हुआ। उसने प्रथम बार शराब पीने का वर्णन किया है। शराब पीने के कारण उसके परिवार वाले उसे आगे नहीं पढ़ाना चाहते थे। इस डर से वह जीवन भर शराब न पीने की कसम खाता है। लेखक में शिक्षक का भाव बचपन में ही देखने को मिलता है, वह अपने मित्रों को दसवीं कक्षा में पढ़ना शुरू कर देता है। वह चिन्तामणि सिंह को उसके घर रात मे पढ़ाता है। जब दसवीं का परीक्षाफल घोषित हुआ और वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ, तब उसके गाँव में सभी ने उसकी प्रशंसा की साथ ही आगे न पढ़ाने की हिदायत दी। इसी उपस्थिति में लेखक ने अध्यापक के प्रेम का वर्णन किया है, अध्यापक सुग्रीव सिंह ने उसे तीस रूपये दिए और डी.ए.वी कॉलेज में अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखने को कहा। लेखक ने गौतम बुद्ध के रास्ते पर चलने की ठान ली। शिक्षा के प्रति इनका संघर्ष उनके शिक्षण प्रेम को दर्शाता है। वह जब गृह त्याग कर आजमगढ़ जाने के लिए मुर्दहिया को पीछे छोड़ता है तब उसे वहाँ के लोकजीवन व नटिनिया का स्मरण आता है। तब वह कहता है की

"गौतम बुद्ध के लिए जो स्थान था आम्रपाली का,
सम्भवतः वही थी मेरे लिए नटिनिया"7

सातवें उपशीर्षक में लेखक ने आज़मगढ़ के महाविद्यालय में पढ़ाई व छात्रावास में दलित छात्रों के प्रवेश में होने वाली अड़चनों पर प्रकाश डाला है लेखक ने डी.ए.वी कॉलेज में आर.एस.एस द्वारा किये जाने वाले जातिवाद का वर्णन बेबाकी व स्पष्टता से किया है। लेखक ने ताड़ीखाने का वर्णन करते हुए 'हरिवंश राय बच्चन' की पंक्ति का भी वर्णन किया है।

"गूंज उठी मदिरालय में, लो पिया पियो की बोली"8

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

लेखक ने अपनी पहली बिना टिकट की रेल यात्रा, आज़मगढ़ से बनारस तक का वर्णन स्पष्टता से किया है तथा रास्ते की वस्तुओं का वर्णन सूक्ष्म रूप से किया है। उसने अपने मित्र के साथ नर्तकी का नृत्य देखने व शराब पीने जैसी घटनाओं वर्णन का स्पष्ट रूप से किया। 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' के प्रति अपने आकर्षण का भी वर्णन किया। लेखक को पहली बार छह महीने की स्कॉलरशिप के 162 रुपये मिले, उसके घनिष्ट मित्र 'देवराज सिंह' ने 81 रुपये चाकू की नोक पर छीन लिए। इस घटना से लेखक को बहुत दुःख हुआ तथा उसे भूखे रहकर कुछ दिन गुजारा करना पड़ा। इस प्रकार लेखक के आजमगढ़ में निवास के दौरान जीवन उतार–चढ़ाव आते रहे।

उपसंहार– संक्षेप में हम कह सकते हैं कि लेखक तुलसीराम द्वारा रचित 'मुर्दहिया आत्मकथा' दलित एवं ग्रामीण जीवन का दस्तावेज है। इस आत्मकथा में लेखक के मुर्दहिया से लेकर दिल्ली तक की संघर्ष गाथा है। अंधविश्वासी, अशिक्षित, जादू–टोना, स्पृश्यता, ठेठ ग्रामीण व कृषक जीवन से निकलकर शिक्षा के सम्बल पर महात्मा बुद्ध एवं 'डॉ. भीमराव अंबेडकर' के जीवन से प्रेरित होकर लेखक अनेक व्यवधानों की जंजीरों को तोड़ता हुआ दिल्ली के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान 'जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय' दिल्ली में प्रोफेसर के पद तक की यात्रा करता है। इसमे दलित जीवन एवं ग्रामीण जीवन संस्कृति की करुण कथा का चित्रण है। अपमान, अनादर, उपेक्षा, बाल मनोदशा, जीवंत लोकसंस्कृति, संयुक्त परिवार की समरसता का जितना सजीव चित्रण 'मुर्दहिया आत्मकथा' में हुआ है, वह अन्यथा दुर्लभ है। तद्युगीन शिक्षा तंत्र में व्याप्त विद्रूपता एवं भेद–भाव उसकी प्रगति के समस्त दावों को 'मुर्दहिया आत्मकथा' खोलकर रख देती है। शिक्षा में व्याप्त छुआछूत और अपमान का एक उदाहरण है कि–

"मिशिर शोर मचाते हुए मुंशी जी के पास दौड़े और चिल्लाते रहे कि चमरा ने कुआं छू लिया... मुंशी जी दिन भर रुक–रुककर गालियां देते रहे।"9

इस प्रकार हम कह सकते हैं की मुर्दहिया रोती हुई संवेदनाओं की आत्मकथा है जिसे पढ़ते समय लेखक के साथ–साथ पाठक भी लेखक दुःख, संत्रास, संघर्ष एवं आक्रोश में संलिप्त हो जाता है।

स्रोत–

1. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 5 ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
2. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 21, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
3. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 29, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
4. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 31, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
5. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 54, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
6. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 73, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
7. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 163, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
8. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 169, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021
9. डॉ. तुलसीराम– मुर्दहिया, पृष्ठ संख्या 55, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली –संस्करण 2021